॥ ओ३म् तत्सत् ॥

सदाचार

मुद्रक व प्रकाशकः—
भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस"
श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी

—:o:—

५०० पुस्तकें राजकुमारी श्रीमती देवी भगवती सुपुत्री श्रीमान् राव बहादुर कैप्टिन राव बलबीर सिंह जी ओ० बी० ई०, एम० एल० ए०, जागीरदार रेवाड़ी ने छपवाईं।

तृतीयवार	मार्च	मूल्य
१०००	१९३९	-)

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी के संस्थापक
तथा
'सदाचार' के उपदेष्टा, समाधिस्थ परम पूज्य
श्री १०८ श्रीस्वामी परमानन्द जी महाराज।

रेवाड़ी के संस्थापक

धिस्थ परम पूज्य

जी महाराज।

॥ तत्सत् ॥

प्राक्कथन

परमानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं.
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षी भूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।

परम पूज्य श्री १०८ श्रीस्वामी परमानन्द जी महाराज एक उच्चकोटि के सन्त थे। वे सर्वदा ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मदर्शन के आनन्द में निमग्न रहते थे। संसार और संसार के आनन्द को पूर्ण वैराग्य की दृष्टि से देखते थे। उनके दर्शन मात्र से ही परम आनन्द प्राप्त होता था। उनके क्षणमात्र के ही सत्संग से मनुष्य को शान्ति और उल्लास प्राप्त होता था। मनुष्यमात्र के कल्याण और उद्धार के लिये तथा माया ग्रसित सांसारिक आत्माओं को सत्संगामृतपान कराने के लिये उन्होंने समस्त भारत का भ्रमण किया। घूमते २ एकबार रेवाड़ी के निकट

रामपुरा ग्राम में पधारे। वहां के रईस श्रीमान् राव बहादुर कैप्टिन बलवीर सिंह जी उनके प्रथम दर्शन से ही अत्यन्त प्रभावित हुये। उन्होंने पूज्य महाराज जी के लिये जंगल में एक सुन्दर बंगला बनवा दिया जो कि पश्चात् श्रीपूज्य महाराज जी की कृपा से "भगवद्भक्ति आश्रम" नाम की एक विस्तृत और उपयोगी संस्था बन गई जहां ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला, आदर्श गौशाला आदि कई संस्थायें हैं। परम पूज्य श्री महाराज जी को गरीबों का बड़ा खयाल था। उन्होंने कुरुक्षेत्र, वृन्दावन, गोवर्धन, प्रयाग आदि बीसियों स्थानों पर गरीब अन्धों के मेले कराये जिनमें हजारों अन्धों का इलाज करा कर उनको नेत्रदान किया। सन् १९३१ से परम पूज्य महाराज जी ग्रीष्म ऋतु में शिमले जाया करते थे। उन्होंने वहां पर देखा कि यहां की पढ़ी लिखी जनता में श्रद्धा और विश्वास उठता जा रहा है और वे नास्तिकता की तरफ तेज़ी

से दौड़े आरहे हैं। पूज्य महाराज जी ने इनके कल्याणार्थ 'सत्संग सभा' नाम की एक सभा स्थापित की जहां पर अब आर्य समाजी, सनातनी, सिक्ख, जैन आदि एक स्थान पर इकट्ठे हो कर खूब सत्संग का लाभ उठाते हैं। परम पूज्य महाराज जी को अछूतों से बड़ा प्रेम था उन्होंने आश्रम में सर्व प्रथम अछूतों की पाठशाला ही स्थापित की थी। गोवंश की उन्नति पर वे सर्वदा बहुत जोर दिया करते थे। एकबार अकाल पड़ने पर उन्होंने महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी को प्रेरित करके हजारों गौवों की सुकाल में भिजवा कर उनकी रक्षा कराई थी। परम पूज्य महाराज जी का खयाल था कि हिन्दू मात्र का एक मन्त्र होना चाहिये। वे सब को गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया करते थे। उन्होंने १। लाख के लगभग गायत्री मन्त्र की पुस्तकें छपवा कर वितरण कराईं। समाधिस्थ होने से २० दिवस पूर्व "सदाचार" नामक यह परम पवित्र पुस्तक उन्होंने लिखवाई। इस छोटी सी पुस्तक का

एक एक वाक्य रत्न सदृश है और इसमें मनुष्यमात्र के कल्याण करने के लिये अमूल्य भण्डार है। परम पूज्य महाराज जी इस पुस्तक में मनुष्योपयोगी समस्त शिक्षायें और सिद्धान्त बहुत ही सरल भाषा में जिसे हर एक आसानी से समझ सके लिखवा कर एक बहुत ही उत्तम सार हमको दे गये। यह उनकी अन्तिम स्मृति और मनुष्य मात्र के लिये बहुत ही उपयोगी पुस्तक है।

निवेदकः—

भूमानन्द

ओं तत्सत्

सदाचार

१-मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२-उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३-एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४ साधु सज्जन का सत्संग करे।

५-निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

६-अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

७-एक परमात्मा को ही सर्वोपरि इष्ट देव मानना चाहिये। उसी की पूजा करनी चाहिये। सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना

चाहिये। उसके पवित्र नाम का गुप्त जप करना चाहिये। और उस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये।

८-ईश्वर जीव और माया शान्त अनादि हैं, और ब्रह्म अनन्त अनादि है ऐसा मानना चाहिये।

९-मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविध दुःख की अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

१०-कर्मों के अनुसार उन्नति और अवनति माननी चाहिये।

११-अवतार, मूर्ति पूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को बुद्धि के अनुकूल हों तो मानना चाहिये।

१२-वेद शास्त्रादि प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातों को बुद्धि के अनुकूल मानना चाहिये।

१३-सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

१४-एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है वैसा

बनता है। जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इस में जात पात ऊँच नीच का कोई भेद न होना चाहिये।

१५-अध्यात्म विद्या, गीता, उपनिषद्, कबीर आदि महात्माओं की वाणी का नित्य पाठ करना चाहिये।

१६-आलस्य छोड़ कर आजन्म विद्या अध्ययन करना चाहिये।

१७-सब काम समय पर करने चाहिये।

१८-चार वार सन्ध्या करनी चाहिये।

१९-ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिये।

२०-भगवान् के दर्शन करने के लिये योगाभ्यास करना चाहिये।

२१-देश, नरेश और महेश की भक्ति करनी चाहिये।

२२-सब मतों को उनकी पुस्तकों को, उनके अवतार, पीर पैगम्बरों को और अन्य देशों के मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिये।

२३-सब को अपना आपा समझना चाहिये और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिये।

२४-प्यारा हितकर सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिये।

२५-अपने घर पर आए हुए अतिथि का यथायोग्य पूजन सत्कार करना चाहिये।

२६-आपत्ति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिये।

२७-अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुए अपने गुण को भूल जाना चाहिये।

२८-सम्पूर्ण कर्मों के फलों को परमात्मा के अर्पण करना चाहिये।

२९-प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिये।

३०-बलवान् की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुभीता देनी चाहिये।

३१-मन वाणी और कर्म से सब को सुख पहुँचाना चाहिये।

३२-गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न कर के दुधार बनाना चाहिये और गोचर भूमि छुड़वाना चाहिये।

३३-विषयों के आधीन न होना चाहिये।

३४-अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये।

३५-अधिक सन्तान न बढ़ानी चाहिये।

३६-जिसे अपने लिये चाहे उसे दूसरे के लिये करना चाहिये।

३७-हरेक काम सब की भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।

३८-दूसरों की बड़ाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये।

३९-पड़ोसी का मान व आदर अपना जैसा करना चाहिये।

४०-खान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्य मात्र का कर लेना चाहिये।

४१-दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये।

४२-मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना

चाहिये।

४३--मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये और बहुत भूख लगे तब खाना चाहिये, और बहुत नींद आए तब सोना चाहिये।

४४--सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढ़ावे भोजन करना चाहिये।

४५--विवाह स्वयंबर की रीति से जात पात के विचार विना, लड़का लड़की के प्रेम होने पर उनकी इच्छानुसार होना चाहिये।

४६--एक पुरुष को एक ही स्त्री के साथ विवाह करना चाहिये। आवश्यकता होने पर दूसरी से भी विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष को अधिकार है वही स्त्री को भी होना चाहिये।

४७--हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहियें।

४८--स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये उन्हें प्रणाम करना चाहिये, पैर की जूती समझने की जगह शिर का मुकुट समझना चाहिये

और इसके स्मरणार्थ "गौरी शंकर सीता राम राधे श्याम, श्यामा श्याम" इस मन्त्र का जप करना चाहिये।

४९-स्त्री को पति व्रत धर्म और पुरुष को नारी व्रत धर्म पालन करना चाहिये। स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी होकर उत्तम सन्तान पैदा करने का दृढ़ संकल्प होना चाहिये।

५०-अच्छे २ लाभदायक, पूज्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहियें। वृक्षों की, पशुओं की, मनुष्यों की, औषधियों की, उत्तम नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहिये।

५१-तालाब, कूआ, मन्दिर, प्याऊ आदि बनवाने चाहिये।

५२-ब्याज थोड़ा लेना चाहिये। देश और धर्म के लाभ को विचारते हुए व्यापार करना चाहिये।

५३-स्त्री, धन, गृह, वस्त्रादि से दूसरे की बहुत ज़रूरत को पूरा करना चाहिये।

५४-आवश्यकताएँ जितनी कम हो सकें कम

करना चाहिये।

५५--दस २ और पांच २ गावों के मध्य एक २ आश्रम बनाना चाहिये और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाठशाला होनी चाहिये

५६--कभी कभी नाचना और गाना भी चाहिये।

५७--पन्द्रह सोलह, अठारह, बीस वर्ष तक उनके आचार की, ब्रह्मचर्य की पूरी देख भाल के साथ रक्षा करनी चाहिये।

५८--वृद्ध मां बाप की और दुःखी पड़ोसी तथा मनुष्य मात्र की सेवा करनी चाहिये।

५९--मुकुटदार टोपी टोप, पाग इत्यादि सूर्य की किरणों से आंखों की रक्षा करने वाला शिरोपा पहनना चाहिये।

६०--बालकों को खेल के द्वारा शिक्षा देनी चाहिये। उनके दिमाग़ पर बहुत दबाव या बोझ न डालना चाहिये।

६१--सब को बांसुरी बजानी चाहिये। सब को हर दम खुश और खुर्रम रहना चाहिये।

६२--बलवान के साथ लड़ाई नहीं करनी चाहिए।

६३--सिर पर अधिक बोझ न धरना चाहिए।

६४--शरीर पर कभी बुहारी की धूल न पड़ने देना चाहिए।

६५--नखों से पृथिवी न कुरेदनी चाहिए, न हाथों से तिनका ही तोड़ना चाहिए। दोनों हाथों से सिर न खुजाना चाहिए।

६६--उदय होते, अस्त होते और मध्याह्न सूर्य को न देखना चाहिए। पानी में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा हो तो उसको न देखे। इन्द्र धनुष को न देखे न दूसरे को दिखाना चाहिये।

६७--मल मूत्रादि वेगों को न रोकना चाहिये।

६८--काम क्रोधादि मन के वेगों को रोकना चाहिये।

६९--इन्द्रियों को न पीड़ित करे न उनका बहुत लाड़ ही करना चाहिये।

७०--पैर पर पैर रखकर न हिलाना चाहिये।

७१--देहरी पर बैठ कर खाना नहीं चाहिये। रात्रि को देव मन्दिर में, अथवा वृक्ष के नीचे अकेले

न सोना चाहिये।

७२-दिन में मलमूत्र उत्तर को मुख करके, रात्रि को दक्षिण, दोनों सन्ध्याओं में उत्तर को मुंह करके और गड़बड़झाला में जिधर को चाहे उधर को मुंह करके मल मूत्र त्यागना चाहिये।

७३-जो कुछ संसार में होता है वह भावि के आधीन है ऐसी अवस्था में चिन्ता न करनी चाहिये। अडोल चित्त होना, शिर आई को शान्ति से सहना भगवान् के साथ प्रेम करना यही जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।

७४-ईश्वर की उपासना जीवन, और प्रकृति की उपासना मरण समझना चाहिये। विद्या जीवन, अविद्या मरण, सत्य जीवन, झूठ मरण, धर्म जीवन, और अधर्म मरण, परोपकार जीवन और स्वार्थ मरण, पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मरण, ब्रह्मचर्य जीवन और व्यभिचार मरण, सादापन जीवन और सजावट

मरण, एकता जीवन और विरोध मरण, मित्रता जीवन और शत्रुता मरण, वीरता जीवन, और कायरता मरण, सत्संग जीवन और कुसंग, मरण, सन्तोष जीवन और लोभ मरण, अहिंसा जीवन और हिंसा मरण, कृतज्ञता जीवन और कृतघ्नता मरण समझना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता है और मौत से डरता है। इसलिये जीवन के साधनों में रुचि और मृत्यु के साधनों से घृणा करनी चाहिये।

७५–श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता करे। और संसर्ग भी उन्हीं का करे। नीच मनुष्यों का संग, छोड़ देना चाहिये।

७६–देव, राजा, वृद्ध, विद्वान् वैद्य अतिथि, इनकी सेवा करे।

७७–याचकों को निराश कर खाली हाथ न जाने दे।

७८ किसी की अवज्ञा न करे। गुरु व पूज्य लोगों के पास सदा नम्रता से बैठे। पांव पसार कर

बैठना आदि अयोग्य कार्य न करें।

७९-अपकार करने वाले मनुष्यों के साथ भी सदा उपकार करे। सब को अपने समान जाने और द्वेषी से दूर रहे। कोई मनुष्य हमारा वैरी है अथवा अमुक मनुष्य का मैं वैरी हूँ ऐसा किसी प्रकार प्रकाशित न करे।

८०-किसी स्थान में अपना अपमान हुआ हो और अपने ऊपर स्वामी का स्नेह न हो तो इसको भी प्रकाशित न करे।

८१-पानी में अपना प्रतिबिम्ब न देखे।

८२-नग्न होकर जल में न घुसे जिसकी गहराई विदित न हो, जिस जल में मच्छादि हिंसक जीव रहते हों, उसमें भी न घुसे।

८३-बोलने के समय थोड़ा, हितकारी, सत्य प्रसंग के अनुसार मीठा वचन बोले।

८४-अधिक रस वाले घी सहित और हितकारी पदार्थों का प्रमाण अनुसार भोजन करे। रात्रि में दही न खावे, बिना नमक के कभी

दही न खावे, मूँग की दाल, शहद, घी शर्करा के विना दही न खावे।

८५-मनुष्यों के अभिप्राय को जान कर जो मनुष्य जिस प्रकार से प्रसन्न हो, उसी प्रकार वर्ते क्योंकि अन्य मनुष्यों को प्रसन्न करना ही चतुरता है।

८६-जिस प्रकार सहाय विना मनुष्य सुखी नहीं होता उसी प्रकार सब के ऊपर विश्वास करने वाला अथवा सब के ऊपर सन्देह रखने वाला भी मनुष्य सुखी नहीं होता।

८७-कभी उद्योग करने से खाली नहीं बैठना चाहिये। किसी के सफली भूत उद्योग को देख कर उस पर ईर्षा न करनी चाहिये। जो पुरुष ऐश्वर्यवान के ऐश्वर्य को देख कर दुख मानते हैं वह सदैव दुखी रहते हैं। विद्वान् को यह विचार करना चाहिये कि अमुक पुरुष को किस प्रकार यह ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। उसी विद्या और उसी उपाय

से हम भी धनोपार्जन करके अपना यश प्रकाश करें। किसी के संचित किये हुये धन की इच्छा न करें।

८८-खिड़की आदि वाले हवादार मकान बनाने चाहिये।

८९-सुखियों से मित्रता, दुखियों पर दया, साधुओं से मुदिता और दुर्जनों से उपेक्षा करना चाहिये।

९०-ग्रह, भूत और देवताओं के वहम और पाखण्ड को नहीं मानना चाहिये।

९१-वर्षा में धूप में छत्री धारण करके चले। रात में भय के समय हाथ में लकड़ी लेकर चले। जूते पहने रहे। देह की रक्षा करे। आगे को चार हाथ पृथिवी देख कर चले।

९२-जहां अग्नि का समूह हो वहां न जाय, सन्देह युक्त वाहन पर न चढ़े। उन्मत्त हाथी

के पास न जाय।

९३-श्रेष्ठ मनुष्यों की सभा में सन्मुख मुँह करके खांसी श्वास डकार, जंवाही और छींक नहीं लेवे। सभा में बैठकर कभी नाक नही कूरेंदे।

९४-ऊकडू कभी न बैठे, अधिक देर तक घुटने ऊँचे करके नहीं बैठे।

९५-अप्रिय वस्तु को निरन्तर न देखे। हाथों से केशों को नहीं हिलावे।

९६-दो पूज्य मनुष्य अथवा स्त्री पुरुष खड़े हों तो उनके बीच में होकर नहीं जाय।

९७-शत्रु अथवा वेश्या का अन्न कभी न खाय।

९८-किसी का वृथा प्रतिभू न बने। किसी का वृथा साक्षी न हो।

९९-किसी की धरोहर न रक्खे और नहां जूवा हो उसको दूर से छोड़ दे।

१००-स्त्री को अलग शैय्या पर न सुलावे। पुरुषों के स्थान में स्त्री को न रक्खे और छिद्रों

वाली फटी टूटी शैय्या पर शयन न करे।

१०१-किसी की निन्दा न करे।

१०२-सब ब्रह्माण्ड को अपना शरीर और उसमें सत्ता स्फूर्ति दाता परमात्मा को अपना आत्मा समझे।

१०३-सुख और भलाई परमात्मा की तरफ से दुःख और बुराई अपनी गलती से समझे।

१०४-मर के मैं परमात्मा को ही प्राप्त होऊँगा ऐसा दृढ़ निश्चय रक्खे।

१०५-जहां तक हो किसी को बुरा न समझे और न कहै।

१०६-जैसा कुछ मिल जाय उसी में सन्तुष्ट रहे।

१०७-अपने को जो सुन्दर और प्यारी वस्तु रुचे उसको परमात्मा का प्रसाद समझ कर ग्रहण करे।

१०८-सवेरे उठते ही सब को ओं ओं जय श्रीकृष्ण की कह कर सत्कार करे।

१०९-गायत्री मन्त्र से सूर्य के सामने खड़ा हो करके

स्तुति प्रार्थना और उपासना करे।

११०-उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो।

१११-सिद्धि की दो कुञ्जियां हैं बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग करना।

११२-किसी बात में जल्दी न करो। जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प करो, करने के पूर्व उस काम की हानि लाभ भली भांति मन में तोल लो फिर उसको करो परिणाम चाहे जो हो।

११३-किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊँचे चढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है।

११४-मालिक पर भरोसा करो। पर ऊँट के पांव बांध कर रक्खो।

११५-किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है। यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते

परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

११६–स्वतन्त्र और स्वाधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिये दूसरे का आश्रित नहीं है।

११७–एक से एक मिल कर ग्यारह होते हैं। अच्छे और नीति संयुक्त कामों के लिये मिलने का नाम नीति और विरुद्ध कामों के लिये मिलने का नाम "गुट्ट" है।

११८–न्याय में कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध हो जाता है।

११९–जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है तो उसको इन अवगुणों से बचना चाहिये। अधिक सोना, ऊँघना, डर, क्रोध, आलस्य और टालमटोल।

१२०–राज भक्ति का भारी दर्जा धर्मशास्त्र और नीति दोनों में है। राजा या बादशाह के

द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ता है।

१२१–घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिन्ह है।

१२२–जो दूसरे की निन्दा नहीं करता, जिसको अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, जो दूसरों को सुख पहुँचाता है, छोटों से कोमलता तथा दया भाव, से और आदर सत्कार के साथ वर्तता है तथा खेल में भी किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है।

१२३–मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूँ।

१२४–आधी से ज्यादा दुनियां पुनर्जन्म में विश्वास करती है।

१२५–सज्जनों के पड़ोस में रहो। भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो। शान्त स्वभाव रहो। जब कोई दोष लगावे तो अपने मनको न बिगाड़ो। सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में

पिचक न जाओ। दूसरे का माल बेईमानी से मत लो। जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो। किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो।

१२६-पक्के धर्मी की बोली मीठी होती है। क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर बोलेगा।

१२७-झूठी खबर न उड़ाओ। बुरे से मेल न करो। तुम्हारे शत्रु का बिचरा हुआ बैल मिले तो उसके घर पहुंचादो परदेशी को न सताओ। जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिये भी छोड़ दो। अपने पड़ोसी के साथ अत्याचार न करो। मज़ूर की मजूरी रात भर न रक्खो। बहरे की ठठोली न उड़ाओ। अन्धे की राह में ठोकर खाने को ढेला न रक्खो। मुखबरी न करो। चुगली न खाओ। अपने पड़ोसी को बुरे काम करने से डाटो। किसी को खोटी निगाह से न देखो। लग्न मुहूर्त

का विचार मत करो।

१२८–बूढ़ों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो। धरती को बेच न डालो।

१२९–प्रेम आकर्षण या खींच शक्ति का नाम है जिससे यह सब रचना ठहरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप हैं अपने से बढ़ कर किसी को चाहना प्रेम है। जो अपने से बढ़ कर मालिक को चाहता है उसको तन, मन, धन अपने प्रीतम पर वार देने में क्या शोच विचार होगा।

१३०–तीन बात जितनी बढ़ाओगे बढ़ेंगी। भूख नींद और डर।

१३१–तीन की महिमा तीन जानते हैं। जवानी की बूढ़े, आरोग्यता की रोगी और धन की निर्धन।

१३२–तीन बातों से बचो सब तुम्हें पसन्द करेंगे। किसी से कुछ न मांगो, किसी को बुरा मत कहो, और किसी के मेहमान के बिना बुलाए

पुछल्लगू न हो।

१३३–तीन के बिना तीन नहीं रहते। धन बिना वाणिज्य, के विद्या बिना शास्त्रार्थ के और राज्य बिना शासन के।

१३४–बूढ़ों का आदर करना, छोटों को सलाह देना बुद्धिमानों से सलाह लेना, मूर्खों के साथ न उलझना।

१३५–चार तरह के आदमी होते हैं-मक्खी चूस, कंजूस, उदार और दाता। जो न आप खाय न दूसरे को दे वह मक्खी चूस, आप खाय पर दूसरे को न दे वह कंजूस, आप भी खाय और दूसरों को भी दे वह उदार और जो आप न खाय परन्तु दूसरों को दे वह दाता कहलाता है। यदि दाता नहीं बन सकते तो उदार तो अवश्य ही होना चाहिये।

१३६–संकट में मित्र की, रण में शूर की, ऋण में साहू की, टोटे में स्त्री की, और रोग शोक में नातेदारों की पहचान होती है।

१३७-खुशी, रंज, रोगी: मौत यह अपने आप आती हैं।

१३८-चार जाकर फिर नहीं आती:-छूटा हुवा तीर, मुँह से निकली बात, बीती हुई उमर और टूटा हुवा दिल।

१३९-जो आके न जाय बुढ़ापा देखा।
जो जाके न आय वह जवानी देखी॥

१४०-चार चीजें पहले निर्बल दीखती हैं और आगे जोर दिखलाती हैं:-शत्रु, आग, रोग और ऋण।

१४१-पांच के संग से बचना चाहिये झूठा, मूर्ख, कंजूस डरपोक और दुष्ट।

१४२-मनुष्य को चाहिये क्रोध को प्रेम से जीते, बुराई को भलाई से, लालची को उदारता से, और झूठ को सत्य से।

१४३-बुढ़ापे तक स्थिर रहने वाली भलाई सुखदाई है। दृढ़ता से पकड़ा हुआ विश्वास सुखप्रद है, ज्ञान का प्राप्त करना आनन्ददायक है और

पापों से बचना सुखदाई है।

१४४-जो अन हुई बात को कहता है और जो हुई से इन्कार करता है वह दोनों नरकगामी हैं।

१४५-जिसका मन संयम में है उस ही में शक्ति, शान्ति, प्रेम और बुद्धि है। उस ही ने सम्पूर्ण जगत् को जीता है जिसमें पूर्ण शान्ति है।

१४६-पण्डित चिन्ता, भय, शोक, मोह, निराशा और घृणा इन सब से दूर रहता है।

१४७-इन्द्रियों का निग्रह करना उत्तम है।

१४८-शरीर का संयम अच्छा है, वाणी का संयम उत्तम है। इसी तरह प्रत्येक बात में संयम उत्तम है। जो सब बातों में संयम कर लेता है वह सब दुःखों से छुट जाता है।

१४९-जो कुछ मिल जावे उसे तुच्छ न समझो, कभी दूसरों से ईर्षा मत करो। जो औरों से ईर्षा करता है उसे शान्ति नहीं मिलेगी।

१५०-जो अपने को नाम व रूप से भिन्न समझता है वह मिथ्या पदार्थों के लिये शोक नहीं

करता। और वह निस्सन्देह भिक्षुक है।

१५१--यह भिक्षुक जो करुणा से काम करता है वह बुद्ध सिद्धान्त के मानने में अचल है।

१५२--पांच को छिन्न भिन्न करदे, ५ को छोड़ दे, ५ से ऊपर होजा ? ऐ भिक्षुक ! जो इन ५ बेड़ियों से बच निकला है वह ही पार गया है

१५३--बिना ज्ञान के ध्यान नहीं और बिना ध्यान के ज्ञान नहीं वह जिसको ज्ञान व ध्यान दोनों हैं निर्वाण के निकट है।

१५४--जिसका चित्त एकाग्र है, और जिसने संसार के प्रलोभनों को छोड़ दिया है वह शान्त कहलाता है।

१५५--जो इच्छाओं के दास हैं वह कामनाओं के प्रवाह के साथ इस तरह नीचे चले जाते हैं जिस तरह मकड़ी अपने बनाए हुए जाले के साथ। बुद्धिमान पुरुष अन्त में इसे काट कर संसार से विरक्त हो जाते हैं।

१५६--जो सामने है उसे छोड़ दो जो पीछे है उसे

छोड़ दो और मध्य में है उसे भी छोड़ दो।

१५७-जिस तरह वर्षा टूटे हुए छप्पर में घुस जाती है, उसी तरह मलिन हृदय में विषय प्रवेश कर जाते हैं।

१५८-जो हमारे जीवन जगत् का दाता है, वही हमारा पिता रक्षक भी है, वह महान् तेजस्वी एवं महान् शासक है।

१५९-वही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है बाकी लोग देखने में स्वतन्त्र मालूम होते हैं मगर वास्तव में वह बन्धन से जकड़े हुए हैं।

१६०-फिज़ूल खर्च करने वाले के पास जैसे धन नहीं ठहरता ठीक इसी तरह मांस खाने वाले के हृदय में दया नहीं रहती।

१६१-जिसे उचित अनुचित का विचार है वही वास्तव में जीवित है, पर जो योग्य-अयोग्य का खयाल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दों में की जाएगी।

१६२-किसी को अपने से प्रेम है तो उसको पाप की ओर जरा भी न झुकना चाहिये।

१६३-झूठ और निन्दा के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो फौरन ही मर जाना उत्तम है, क्योंकि इस तरह मर जाने से नेकी का फल मिलता है।

१६४-जो लोग अपने मित्रों के दोषों की खुल्लेआम चर्चा करते हैं, वह अपने दुश्मनों के दोषों को भला किस तरह छोड़ेंगे।

१६५-संसार में त्यागी पुरुषों से भी बढ़ कर सन्त वह है जो अपनी निन्दा करने वालों की कटु वाणी को सहन कर लेता है।

१६६-काम के समस्त वन को काट डालो, काम के वन से भय उपस्थित रहता है।

१६७-संसार को छोड़ कर तपस्वी हो जाना कठिन है, संसार को भोगना भी कठिन है, आश्रम का जीवन भी कठिन है, घर दुःखदाई है। बराबर वालों के साथ रहना भी दुःखप्रद है। दुःख

सहित भ्रमण शील भिक्षुक ही सब से श्रेष्ठ है।

१६८-यदि मनुष्य परदोष-दृष्टि रखता है और स्वयं सदा अपराध करने की वृत्ति रखता है तो उसके विकार बढ़ेंगे और वह मनः-विकारों के दमन करने से बहुत दूर है।

१६९-महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला संसार जल बरसने वाले बादलों का बदला किस तरह चुका सकता है?

१७०-योग्य पुरुष अपने हाथों से मेहनत करके जो धन जमा करते हैं, वह सब दूसरों ही के लिए होता है।

१७१-हार्दिक उपकार से बढ़ कर कोई चीज नहीं।

१७२-जब जीव तुझे जान जाता है, तब उसके लिए कोई बेगाना नहीं रहता, तब उसके लिए सब द्वार खुल जाते हैं। हे प्रभु! मुझे यह वर दो कि मैं अनेकत्व के बीच एकत्व के अनुभवानन्द से कभी वञ्चित न रहूँ।

यह संक्षेप से सब मनुष्यों
कहा है। इसको अपने में
अपने चारों ओर बाहर
का चिन्तन करते हुए

आत्मा परमात्मा विश्वात
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्म
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञान
सुखात्मा चिदात्मा सद
भवात्मा भवात्मा शून्या
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येय

ओंशम् ओं खं ब्रह्म ओं

यह संक्षेप से सब मनुष्यों के लिए सदाचार कहा है। इसको अपने में धारण करो, और अपने चारों ओर बाहर और भीतर परमात्मा का चिन्तन करते हुए यही गीत गाएँ।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप।
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप।

ओंशम् ओं खं ब्रह्म ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

—:•:—

वेद में सदाचार

१–भगवान् कहते हैं हे जीवों ! मैं सत्य स्वरूप महा गम्भीर सत्य विद्या के प्रकट करने से जातवेदा हूँ । मैं किसी दास वा आर्य से पक्षपात नहीं करता । जो मेरी आज्ञा को मानेगा, पालेगा, उस पर चलेगा मैं उसी का उद्धार करूँगा ।

२–ज्ञान विज्ञान के जानने के लिए दो प्रकार की वाणी हैं सत्य और झूँठ । दोनों ही मनुष्य पर अपना प्रभाव डालती हैं । उनमें से जो सत्य है वह मनुष्य की जन्म मरण से रक्षा करती है और जो असत्य है वह मनुष्य का नाश करती है । इसलिये हठ धर्मी को, किसी मजहब की कट्टरता को और पक्षपात आदि को छोड़ कर सत्य वाणी को पकड़ो ।

३–एक साथ चलो, परस्पर संवाद करो न कि विवाद । सब के मन की रफ्तार को देखो उस

के अनुसार मधुर हितका
वाणी से बर्ताव करो ।
रहित हों, समान हों । तुम
का अभाव हो । तुम्हारी
सहानुभूति हो । ऊँच नी
सब मिल कर उत्तम
एक दूसरे के साथ मैत्री
उत्तम ज्ञान से शुद्ध करो
वालों का मन साफ हो ।
पीवो । प्रायः खाना पीना
४–दीर्घ आयु वाले मिल
परमात्मा हमारी प्रात भा
५–तुम्हारे अन्दर सहृदयता
अद्वेष को स्थापित कर
से उसी प्रकार प्रीति पू
नये उत्पन्न हुये २ अप
करती है ।
६–पुत्र पिता का अनुव्रत

के अनुसार मधुर हितकारी और प्रेम भरी वाणी से वर्ताव करो। तुम्हारे विचार द्वेष रहित हों, समान हों। तुम्हारी सभा में विरोध का अभाव हो। तुम्हारी जाति में एकता हो, सहानुभूति हो। ऊँच नीचता का अभाव हो। सब मिल कर उत्तम ज्ञान को प्राप्त करो। एक दूसरे के साथ मैत्री करो। अपने मन को उत्तम ज्ञान से शुद्ध करो। इकट्ठे कार्य करने वालों का मन साफ हो। सब मिल कर खाओ पीओ। प्रायः खाना पीना समान होना चाहिये।

४-दीर्घ आयु वाले मिल बैठ खाने वाले हों। परमात्मा हमारी प्राप्त भाग में रक्षा करें।

५-तुम्हारे अन्दर सहृदयता मन की शुद्धता और अद्वेष को स्थापित करता हूँ। तुम एक दूसरे से उसी प्रकार प्रीति पूर्वक व्यवहार करो जैसे नये उत्पन्न हुवे २ अपने बछड़े से गौ प्यार करती है।

६-पुत्र पिता का अनुव्रत हो, माता के कारण पुत्र

पुत्र शुद्ध मन वाला हो। पत्नि अपने पति से मधुर और शान्ति कारी वाणी बोले।

७–भाई से भाई द्वेष न करे, बहन से बहन द्वेष न करे। उत्तम और सव्रत होते हुये तुम परस्पर कल्याणकारी वाणी से बोलो।

८–तुम्हारा अन्न का भाग समान हो। मैं तुमको एक ही धुरे में जोड़ता हूँ।

९–तुम्हारे विचार समान अर्थात् द्वेष रहित हों। तुम्हारी सभा में एकता हो, तुम्हारा व्रत अर्थात् कार्य समान हो तथा तुम्हारा चित्त समान हो। जिस करके आपस में सहानुभूति संवेदना हमदर्दी, परस्पर प्रेम भाव, परमेश्वर की भक्ति बढ़े वही काम करो। जो तुम अपने लिये चाहते हो वही दूसरों के लिये करो। क्योंकि सब तुम्हारे ही आत्मभूत हैं। दूसरे से बर्ताव कूप की वाणी की तरह का है। जैसा कहोगे वैसी प्रतिध्वनि होगी।

प्रार्थना

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओं॥

ओं—सर्व व्यापक रक्षा करने वाले।

भूः—सत्ता स्फूर्ति देने वाले, सत्य स्वरूप।

भुवः—दुःखों के नाश करने वाले, ज्ञान स्वरूप।

स्वः—सुख स्वरूप

तत्—अनन्त, अपार, सब के सारभूत परमात्मा।

सवितुः—सब जगत् को उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले, संहार करने वाले, प्रेरक, प्रेरणा करने वाले।

वरेण्यम्—सर्व श्रेष्ठ।

भर्गो—तेज पुञ्ज ज्योति स्वरूप।

देवस्य—दिव्य ज्ञान और आनन्द के देने वाले, विजय

कराने वाले, प्रकाश स्वरूप, सर्वशक्तिमान् दयालु, कृपालु परमात्मा।

धीमहि-हम आपका ध्यान करते हैं।

धियः-बुद्धियों को।

यः-जो

नः-हमारी

प्रचोदयात्-प्रेरणा करो। आप हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करें कि हम आपको प्राप्त हों। हमको पवित्र बुद्धि और अपनी भक्ति प्रदान कीजिये।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे।
तत्तेजोस्माकं बुद्धिः श्रेयस्करेषु नियोजयेत्॥

हे तेज पुञ्ज, ज्योति स्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनन्द के देने वाले! विजय कराने वाले! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सब को उत्पन्न करने वाले! सबका संहार करने वाले! सब की रक्षा करने वाले! सब को प्रेरणा करने वाले!

अनन्त, अपार आनन्द स्वरूप, ज्ञानस्वरूप परमात्मन् हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हममें तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सब को हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्न कारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनन्द पूर्वक हम आप को प्राप्त हों धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनन्तवार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

ओं शम्

इस मन्त्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान् के दर्शन होंगे, मोक्ष मिलेगी

कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी, पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय, प्राप्त होगी। सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, रिद्धि, चाहने वाले को रिद्धि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति, प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायगा इसमें सन्देह नहीं।

आश्रम के उद्देश

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२. गोरक्षा और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना।

३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।

४. शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।

५. बीमारियों के अवसर पर दवा बांटना।

६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना।

८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।